रविवार, दिनाँक 25-02-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ।

तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी।।

साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी।।

भाषाबद्ध जो सार्थक शब्द हैं।

सार्थक शब्द ही मुख से बोलूँ।।

साजन साजन, साजन जी - निर्मल हो जाए वाणी।।

सजनों जो अभी आपने बोला है, वह केवल बोलना ही नहीं अपितु समझना भी है। इस संदर्भ में ज्ञात हो कि जो भी सजन सार्थक शब्द बोलने में समर्थ हो जाता है और तद्नुरूप आचरण दर्शाता है उस सजन की जिह्वा स्वतन्त्र व संकल्प स्वच्छ होने के साथ-साथ दृष्टि भी कंचन हो जाती है। इस तरह उस सजन के लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति यानि युवा अवस्था का भक्ति-भाव अपनाना सहज हो जाता है। सजनों इतना सा खुद पर आत्म-नियन्त्रण रखना जीवन की बाज़ी जीतने जैसा शुभ लक्षण होता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आपने जो अभी गाया है इसको साथ ले जाना और इसको व्यावहारिक रूप देना। ऐसा करने से आज से शाम पाँच से साढ़े पाँच या साढे पाँच से छह बजे के मध्य किए जाने वाले जिस महामन्त्र के जाप का शुभारम्भ होना है वह कार्य अफुरता से सम्पन्न होगा। अफुरता से सम्पन्न होगा तो जीवन की हर आपदा, हर कठिनाई का स्वयंमेव हल हो जायेगा। परिणामतः मन शान्त व चित्त प्रसन्न हो जायेगा और आत्म-दर्शन करने में सक्षम हो जाओगे।

अतः इतनी बड़ी उपलब्धि के लिए अपनी वाणी को सार्थक बनाना है और कोई भी निरर्थक शब्द मुख से न निकले, इस पर नियन्त्रण रखना है। याद रखो लम्बे आडम्बरों के स्थान पर यह अत्यन्त सूक्ष्म युक्ति है। अतः हमारे हिसाब से इसमें किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये। सजनों इसके अनुरूप खुद को कैसे साधना है, वह आपको आज आत्म-निरीक्षण की क्लास में समझाया जायेगा। इसे समझ कर आप आज ही कामयाब होने के

काबिल हो जाओगे और आप द्वारा किए जाने वाले महामन्त्र के जाप का नतीजा भी मँगलकारी निकलेगा। अतैव सजनों आज अपने मँगल हेतु निश्चय लेकर जाओ कि अब हमारे मुख से सदा-सर्वदा सबके प्रति सार्थक वाणी अनुरूप ही व्यवहार चलेगा। इस प्रकार निष्पाप जीवन जीना आरम्भ कर दो और मानो कि यही निष्पाप जीवन जीने के लक्षण हैं। अब ध्यान से भजन सुनोः-

तीनों तापों ने आन सताया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।

महाबीर जी दे चरण मैं धो धो पीवां, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

सुत्ती दुनियां नू आप जगा ही दियो, नाम हृदय विच अपना बसा ही दियो।

अपने चरणां विच लगाया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

काम क्रोध नू परे हटाओ भैणां, महाराज जी नू जल्दी सजाओ भैणां।

चित्त हरि चरणां विच लाया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

आशा तृष्णा नू परे हटाओ भैणां, महाराज जी नू वस्त्र पहनाओ भैणां।

महाबीर जी ने ऐह समझाया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

मोह माया दी फाँसी हटा ही दियो, माला रघुनाथ जी दे गल विच पा ही दियो।

महबीर जी ने रस्ता बताया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

लड़ाई झगड़ा भैणां मिटा ही दियो, रघुनाथ जी नू मस्तक तिलक लगा ही दियो।

महाबीर जी आख सुनाया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

नाम कठ्ठा करके लै आओ भैणां, रघुनाथ जी दे दर्शन पाओ भैणां।

महाबीर जी ने रस्ता दिखाया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

वाशना नू परे हटाओ भैणां, जन्म मरण तों बच जाओ भैणां।

जपो नाम बली ने बताया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, सुन लौ अर्ज मेरे बलधार जी ए।

समदृष्टि दा रस्ता बताया ए, हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।।

सजनों इस भजन में जो सन्देश है, अगर आज का मानव गहराई से उसे समझ लेता है और वैसा ही अपने स्वाभाविक स्वरूप का परिवर्तन करने के प्रति तत्पर हो जाता है तो कोई भी कारण नहीं बनता कि वह अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने में असफल रहे। सजनों जानो कि जब सच्चेपातशाह जी को तीनों तापों यानि आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक रोगों ने परेशान करना आरम्भ कर दिया तब सच्चेपाशाह जी की पुकार सुनकर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने उन्हें जीवन विजयी होने की अचूक युक्ति बताई। इस सन्दर्भ में जानो कि यह रोग क्या हैं? - जानो यह है मानसिक अज्ञानपूर्ण अवस्था यानि किसी भी प्रकार के ज्ञान की परिपूर्णता का न होना। विडम्बना की बात यह है कि इतनी उमर बीत जाने पर भी हम तीनों तापों से संतप्त होने के कारण जीवन के वास्तविक यथार्थ ज्ञान से अनिभिज्ञ रहे। इस संदर्भ में याद रखो कि यथार्थ ज्ञान ही मानव को श्रेष्ठता का प्रतीक बनाता है। परन्तु इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए कुदरत के निमित्त समर्पित होना पड़ता है। यहाँ कुदरत से आशय परमात्मा की उस प्राकृतिक शक्ति से है जिस ने हमारी बनत बनाई है। अतः उस कुदरत के प्रति सदा समर्पित रहना है।

उपरोक्त भजन के संदर्भ में सजनों जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों द्वारा कुदरत की दया औषधि रूप में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर बरस रही है। यह औषधि अपने आप में हर मानव को तीनों तापों से मुक्त कर परिपूर्ण स्वस्थता प्रदान करने में सक्षम है। अतः विचारों के रूप में जितना सुखद और सार्थक इस ग्रन्थ में से सेवन करोगे उतना ही सुख व आनन्द की प्रतीति का अनुभव होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि इसका श्रवण, पठन व मनन करने से निर्मल भाव मन में उतरते हैं, उस द्वारा मन शान्त व सन्तुष्ट हो आत्मतुष्ट हो जाता है। ऐसा होने पर आपके अन्दर शारीरिक स्वभावों का प्रवेश कदापि नहीं हो पाता। आशय यह है कि एक आत्मतुष्ट इंसान के अन्दर 'काम' प्रवेश नहीं कर सकता। जब 'काम' नहीं है तो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कैसे आएंगे क्योंकि यह तो उसी 'काम' की ही फौज है। ऐसे में जब सरदार ही नहीं है तो फिर फौज कहाँ से आयेगी। सजनों हमें इस बात को समझना है और समझदारी में आकर अपना सजन बनना है।

निश्चित ही इस औषधि के सेवन से आपकी नज़रों में समभाव हो जायेगा और आप भी सच्चेपातशाह जी की समदृष्टि के रास्ते पर चलते हुए अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाओगे। सजनों जानो फिर नाम चलाने की भी आवश्कता नहीं रहेगी क्योंकि समदृष्टि होने पर सर्व एकरूपता का दर्शन हो जाएगा। सर्व एकरूपता का दर्शन हो गया तो फिर द्वि-द्वेष कहाँ से आयेगा? द्वि-द्वेष ही नहीं रहा तो शेष नकारात्मक भाव कैसे उपजेंगे? नकारात्मक भाव नहीं उपजेंगे तो मानो हम हर प्रकार से स्वस्थ रहेंगे और कुदरत ने जिस कारज की सिद्धि हेतु यानि जगत उद्धार के लिये हमें भेजा है, वह हम सहजता से कर पायेंगे।

इस संदर्भ में सजनों यदि हम जगत का उद्धार करने के स्थान पर खुद ही उसे अपनाने लग पड़े यानि हमने अपने जीवन का सुनहरी समय जगत को समेटने में ही लगा दिया, फिर आत्म उद्धार कैसे होगा? अतः मानो यह जीवन जगत को समेटकर अपने अन्दर धारण करने के लिये नहीं है अपितु यह तो जगत से आज़ाद रह कर जगत का उद्धार करने के लिए है और निःसन्देह जगत के उद्धार के साथ ही हमारा उद्धार भी जुड़ा हुआ है क्योंकि हम भी इस जगत में ही हैं। अतः मानो कि यह उद्धार जगत से निर्लेप रहनेपर ही सम्भव है। सजनों कुदरत के इस खेल को व उसकी दात को समझो। जानो तीनों तापों की एक ही औषधि है - वह है आत्मिक ज्ञान। इस औषधि का नित्य सेवन करने पर ही आप समभाव-समदृष्टि यानि सबके प्रति बराबरी का भाव व दृष्टि अपना कर तीनों तापों से मुक्त हो सकते हो और मोक्ष प्राप्ति कर आत्म-विश्वास के साथ आत्म-निर्भर होकर जीवनयापन कर सकते हो। अतः अपने व सबके कल्याण के लिए न केवल इस औषधि का सेवन आप करो अपितु अपने संगी-साथियों व परिवारजनों को भी इससे परिचित कराओ। इस तरह बन्धनमुक्त हो जगत से आज़ाद हो जाओ। इस संदर्भ में सजनों गौर फरमाओ कि थोड़ा सा भौतिक पाने के लिये आप कितना प्रयास करते हो, यहाँ तक कि अपना दिन-रात लगा देते हो पर इसी के साथ यदि आत्मज्ञान प्राप्त करने के प्रति प्रयास करो तो बाकी कुछ भी सांसारिक प्राप्त करने की इच्छा स्वतः ही समाप्त हो जायेगी क्योंकि तब आप ज्ञानरूप से परिपूर्ण हो जाओगे। सजनों ज्ञानरूप से परिपूर्ण होना प्रकाशमान अवस्था में आने की यानि प्रकाशित होने की बात होती है। इस ज्ञान का प्रकाश फिर जब रोम-रोम, रग-रग में फैलता है तो चार वेदों, छः शास्त्रों का ज्ञान हमारा ज्ञान हो जाता है। यही सत्य है और इस सत्य को स्वीकारो तो आपका मन अफुर अवस्था में सधा रहेगा। आशय यह है कि इतना कुछ

भौतिक इकट्ठा करने की बजाए यही एक आत्मिकज्ञान ही आपको परिपूर्ण कर देगा और आप खालिस सोने की तरह चमकते हुए नज़र आओगे। इस तरह आप सबसे अमीर हो अपना जीवन कारज सिद्ध कर लोगे। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने मन में प्रबल इच्छा जाग्रत करो। याद रखो इच्छा में जितनी अधिक प्रबलता होगी उतना शीघ्र ही आप इस कार्य सिद्धि के प्रति सफल होंगे। अब सब आपके हाथ में है। अब आगे सुनोः-

दास क्यों न वरीवां, महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां।

नी मैं हुण सुणियां, अंजनी माता दा लाल खड़ा।।

नी मैं हुण सुणियां, दासां दा आधार खड़ा।

दास क्यों न वरीवां, महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां।।

नी मैं हुण सुणियां, चरणां विच बलधार खड़ा।

नी मैं हुण सुणियां, चरणां विच गदाधार खड़ा।।

दास क्यों न वरीवां, महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां।

नी मैं हुण सुणियां, काम क्रोध हटावन वाला खड़ा।।

नी मैं हुण सुणियां, मौत तों बचावन वाला खड़ा।

दास क्यों न वरीवां, महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां।।

नी मैं हुण सुणियां, भक्तां दा प्रतिपाल खड़ा।

नी मैं हुण सुणियां, सांवले चरणां दा मालिक खड़ा।।

दास क्यों न वरीवां, महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां।

नी मैं हुण सुणियां, दर्शन दिखावन वाला खड़ा।।

नी मैं हुण सुणियां, सिया राम मिलावन वाला खड़ा।

दास क्यों न वरीवां, महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां।

सजनों क्या कमाल है? अगर हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित हों और उनके वचनों व वाणी का दिल से आदर करते हुए जीवन में उतारने के प्रति तत्पर हों जाए तो यह कमाल हमारे साथ भी हो सकता है। सजनों सच्चेपातशाह जी को जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने समदृष्टि का रास्ता दिखा दिया तो सच्चेपातशाह जी कह उठे कि मैं उन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों व आज्ञाओं के प्रति क्यों न अपना सर्वस्व वार दूँ जो मुझ सूरत को ऐक्य भाव पर खड़ा कर मौत के भय से भी आज़ाद कर देने में सक्षम हैं? इस सन्दर्भ में ज्ञात हो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी जीवन जीने की जो कला प्रदान कर रहे हैं उस कला को धारण कर तद्नुरूप जीवन यापन करना ही समदृष्टि होने का रास्ता है। अतः समदृष्टि होने की यह इच्छा हमारे मन में भी होनी चाहिये। ऐसा सुनिश्चित करने से न केवल हमारे मनोभावों में सार्थकता आएगी और निरर्थक भाव नहीं उठेंगे, वरन हम तो मौत से भी निर्भय हो जाएंगे। सजनों जानो कि जब अजरता-अमरता की समझ आ जाती है तो मौत का भय नहीं रहता, यानि मौत कुछ बिगाड़ नहीं सकती। ऐसा सजन अमरता के भाव से ही आत्म-विश्वास के साथ निर्भय होकर जगत उद्धार के प्रति अपना जीवन समर्पित कर देता है। यहाँ मन में निःस्वार्थ भाव यानि निष्कामता का भाव उत्पन्न होता है और कामना का नाश हो जाता है। जानो जब कामना का नाश हो जाता है तो स्वार्थपरता व 'तूँ-मैं' का सवाल खत्म हो जाता है और सर्व एकात्मा का दर्शन हो जाता है। तब बाल अवस्था का भक्ति-भाव समाप्त हो जाता है और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताया युवा अवस्था का भक्ति-भाव सशक्त हो जाता है।इसी भक्ति भाव को अपना कर सजनों सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी भगत-शिरोमणि कहलाये और उन्होंने सब कुछ प्राप्त किया।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि जो भगत होता है उसकी सुरत/ख़्याल, परमात्मा की अवज्ञा कभी नहीं करती। इसतथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिये बनता है कि हम अपने ऊपर पहरा रखें ताकि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो विचार विदित हैं उनकी हमारे मन, वचन, कर्म द्वारा कभी भी अवज्ञा न होवे। याद रखो सतर्क करने के बावजूद भी अगर हमसे यह भूल हुई और होती रही तो हम जीवन हारने वाले हैं और साथ ही हम अपने कष्टों को बढ़ाने वाले हैं। ऐसा होने पर हमारे जीवन में रोना-झुखना बढ़ेगा ही बढ़ेगा और

हम कलुकाल में ही अटक कर रह जायेंगे। सजनों कलुकाल में अटकने का मतलब है कि हम सतयुग, त्रेता, द्वापर, तीनों युगों तक दग्ध-भस्म में पड़े रहेंगे। फिर दोबारा जब कलुकाल आयेगा तो मानव चोला प्राप्त करने की बारी आयेगी। हमें समझ नहीं आती कि मानव होकर भी आप क्योंकर अपनी विवेक-शक्ति का इस्तेमाल नहीं करते और भेड़ चाल अपना कर असत्य को धारण किए रहते हो। यह कैसी विडम्बना है कि रूप मानव का और चाल भेड़ों वाली। सजनों यह खेल खेलकर क्यों हम अपने साथ मजाक कर रहे हैं? ऐसा मत करो यानि अपने पर तरस खाओ, अपने वैरी मत बनो क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह है। इस गुनाह के फलस्वरूप तीन काल तक दग्ध-भस्म में पड़े रहोगे। ऐसे में शान्ति कहाँ से मिलेगी?

इस संदर्भ में सजनों आगे जानो कि चैत्र का यज्ञ आने वाला है। अतः जो कुछ भी पिछली मीटिंग में सुना है, उसके अनुसार अपना आत्म-निरीक्षण करो कि आपकी पढ़ाई नीति-संगत चल रही है या नहीं ? अगर नहीं चल रही तो पिछली कमी को पूरा करने के लिये दिल से प्रयास करो और चैत्र के यज्ञ तक अपना अच्छा परिणाम प्राप्त कर लो। यह है अपने प्रति सजनता। सजनों जब हम अपने सजन बन जाते हैं तो हम शरीरों से ऊपर उठ परमात्म स्वरूप कहलाते हैं और ईश्वर है अपना आप के विचार पर मज़बूत हो जाते हैं क्योंकि यथार्थ के दर्शन हो जाते हैं और हम आनन्द-विभोर हो उठते हैं। अब चैत्र के यज्ञ तक इस परिणाम को प्राप्त करना है। इस हेतु अगर हर दुनियावी सुख भी वारना पड़े तो वार दो क्योंकि दुनियावी सुख वास्तविक सुख नहीं है। उस सुख के पीछे दुःख छिपा होता है। अब आगे सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

अड़ियो हनुमान जी दे चरण मुश्किल ही निगाह आवन।

प्यारे यत्न कर कर हारे, चरण मुश्किल ही ओ दिखावन।।

अड़ियो चरण ओ कैसे, ओ कैसे हिन चरण।

प्यारे यत्न कर कर हारे, चरण मुश्किल निगाह आवन।।

चरण गले दा हार, चरण हथां दा सिंगार।

चरण नैनां दा हिवे नूर, चरण ओ हिवे मशहूर।।

चरण हिवे सिरताज, चरण अटल ओ राज।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

ओ हां ओ हूं हूं ओ हां ओ हूं हूं।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

साजन जी दा रूप इलाही, कैसी आप दी है रुशनाई।

जेहड़ा आप दी शरणी आवे, कोई विरला ओ स्वरूप नू पावे।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

अपार है जे आप दी कृपा, अपार है यह आप दी दृष्टि।

अपार है यह आप दी महिमा, अपार है यह प्रवृति।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

सब कोई है आप दी चरणी, आप हैं रघुनाथ जी दी शरणी।

रघुनाथ जी दे चरणां ते शीश निवावो, कैसी है ओन्हां दी करनी।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

चमकन ओ शेष प्यारे नाले चमके ओ विछाई।

ऊपर चमक रहे साजन नाले चमके लोक लुकाई।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

ध्वनिः-

मायापति ओ धनुषधारी ओ हां ओ हां।

नीति पुरुषोत्तम ओहदा है नाम, है ओ जगत बिहारी।।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा इतना स्पष्ट और गहरा ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात भी हम कलुकाल के वश में आकर अपना जीवन बर्बाद कर बैठें तो यह अत्यन्त शर्म की बात है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों याद रखो कि हमें अपनी सुरत/ख़्याल को कंचन रखना है और माया के स्थान पर मायापति के संग जोड़ना है। ज्ञात हो कि अगर माया के साथ जुड़े तो माया भी स्त्री है और सुरत भी स्त्री है। फिर वह तो सारी उमर आपस में उलझी ही रहेंगी और अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा में लगी रहेगी। आशय यह है कि माया डंग मारेगी और अपने शौह के प्रति आपको तनिक सा भी सचेत होता देख अपना रूप दिखागी और आगे नहीं बढ़ने देती। इस तरह आप उसी के रूप में उलझकर उसी के निमित्त ही समर्पित हो, उसी के अधीन हो जाओगे और सारी उमर माया इकट्ठी करते-करते अपने स्वरूप को जान ही नहीं पाओगे। सजनों यह हमारी बहुत बड़ी भूल है। हमने यह देखना है कि हमारी सुरत कहाँ जुड़ी हुई है। जगत रूपी माया के जाल में फँसी हुई है या फिर स्वतन्त्र होकर जगत के वाली के संग स्थिरता से बनी हुई है। बस इतना सा आत्म-निरीक्षण करना है और गहराई से करना है ताकि समझ आ जाये। तत्पश्चात हिम्मत दिखानी है और समझना है कि अगर हमारी सुरत जगत के संग जुड़ी हुई है तो कुसंग में है और निन्दनीय है व दुष्चरित्रता की प्रतीक है। इसके विपरीत यदि वह जगत के वाली के साथ जुड़ी हुई है तो संगी है व प्रशंसनीय है क्योंकि वह अपनी इलाही शान में स्थित है और चरित्रवान है। सजनों सुरत का दुष्चरित्रता को प्राप्त होना आपके अन्दर के भाव व वृत्तियों भी विकृत कर शरीरी रूप से दुष्चरित्र बनने का प्रतीक होता है। हमपूछते हैं कि क्योंकर आपब पल भर की खुशी के लिए इन्द्रियग्रस्त हो जाते हो, आसक्त हो जाते हो और विषय वासना का शिकार बन जाते हो। जानो सजनों यह मजा नहीं अपितु मरण होता है क्योंकि इस रस में जो उलझ जाता है वह प्रभु के प्रेमरस से वंचित रह जाता है। अब प्रभु का संग करना यदि अमृत तुल्य है तो जगत का संग करना विष तुल्य है। अमृत का सेवन करने पर वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का ताना-बाना सब कुछ निर्मल

हो जाता है। इसके विपरीत विष का सेवन करने पर अन्दर सब विषैला हो जाता है। ऐसे में हम धीर कैसे बने रह सकते है? तब तो हर कदम पर अधीरता हमारी मानसिकता को उलझाएगी ही उलझाएगी। हम दिन-रात सोचों में डूबेंगे ही डूबेंगे व शरीरी रूप से भी रोग-ग्रस्त होंगे ही होंगे। सजनों हम आपसे पूछते हैं कि क्या यह अपने जीवन के साथ इन्साफ है?

मौन

जानो जब कोई अपने जीवन के साथ ही इन्साफ नहीं कर पाता तो वह कैसे बुद्धिमान कहला सकता है? सजनों यही कलुकाल की निशानी है। इस संदर्भ में उन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की महिमा को देखो जिन्होंने कुल सृष्टि वश में कर रखी है। यकीन मानो सजनों वह परोपकार प्रवृत्ति सब कुछ देने को तैयार हैं पर कोई लेने वाला पात्र भी तो बने। सजनों जानो कि पात्र तो वही बन सकता है जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों की पालना करना सुनिश्चित करे। आप भी ऐसे ही सुपात्र बनो और अपने जीवन की हारी हुई बाजी जीत जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।